JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/2

उदयसिंह – ये सदारंग के शिष्य थे। इन्होंने आश्विन शुक्ल १० सं० १७६८ में 'महावीर चौढालिया' की रचना किशनगढ़ में की।[1] सदारंग नागोरीगच्छ के साधु थे।[2] इस रचना का उद्धरण नहीं मिल पाया।

उदयसूरि – ये खरतरगच्छीय बेगड़शाखा के गुणसमुद्र सूरि के प्रशिष्य और जिनसुंदर सूरि के शिष्य थे। खरतरगच्छ में जिनोदय-सूरि के समय सं० १४२२ में जब धर्मविलास आचार्य पद पर थे तभी बेगड़ शाखा चली थी। इसके पट्टधरों में जिनशेखर>जिनधर्म>जिनचन्द्र>जिनमेरु>जिनगुण>जिनेश्वर>जिनचन्द्र>जिनसमुद्र आदि सूरि गुणसमुद्र से पूर्व हो चुके थे। उदयसूरि ने सं० १७१९ श्रावण में 'सुरसुंदरी अमरकुमार रास' की रचना की। इस रास में रचना का समय इस प्रकार बताया गया है –

संवत उगणोत्तर श्रावण मासि, अेह रच्यो उलासे,
वेगड खरतर गच्छ विराजे, गुणसमुद्र सूरि गाजै।
वर्त्तमान गुरुगच्छ वडइ, श्री जिनसुंदर सुरिंदा,
श्री उदैसूरि कर जोड गावे, सुख सम्पत्ति सदा।[3]

उगणोत्तर का अर्थ देसाई ने १९ लिया है किन्तु श्री अ०च० नाहटा ने इसका रचनाकाल सं० १७६९ बताया है[4]।

ऋषभदास—कल्याण शिष्य; आपकी तीन रचनाओं का पता चलता है—

(१) २३ पदवी स्वाध्याय (१८ कड़ी सं० १७७२ चौमासा गगडाण)
आदि –'गणधर गौतम स्वामी जी समरी श्रुतदातारो रे।

(२) श्रावक नाम वर्णन (१५ कड़ी सं० १७८५ चौमासा गगडाण)

---

१. अगरचंद नाहटा – परंपरा पृ० ११४।
२. मोहनलाल दलीचन्द देसाई – जैन गुर्जर कविओ भाग ३ पृ० १४२२ (प्र० सं०) और भाग ५ पृ० २६७ (न० सं०)।
३. वही, भाग २ पृ० १८६–१८७ (प्र० सं०)।
४. अगरचन्द नाहटा परंपरा पृ० १०८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 2/2

आदि—ध्यान विनय विडसग धरो ए देसी
प्रणमी जिनवर वीर जी रे समरी गुरु कल्याण
श्रावक श्राविका गुण भणूं रे सुत्त तणा परिमाण रे।
सुंदर सांभलौ श्रावक नाम जिम थापै रुडा काम रे।

रचनाकाल—संवर सतर पच्चासीय रे गगडाणइ चउमास,
गुण गुरुआ थी श्रावक सहुरे इम कह ऋषभदास रे।
सुंदर सांभलो श्रावक नाम।[1]

(३) वीर जिनस्तवन (१७ कड़ी)

अन्त-देज्यो सेवा दया करी मुझ मन मोटी आस, आ
तारक तूँ प्रभु माहरो रे अे जाणो अरदास।
सुखकारी सद्गुरु भलो नामै श्री कल्याण,
ऋषभदास इपरि कह समरण होय सुजाण।[2]

ऋषभदास नामक प्रसिद्ध श्रावक कवि इससे पूर्व हो चुके हैं। चौमासा रहने वाले ये ऋषभदास अवश्य साधु होंगे किन्तु अपने गच्छादि का इन्होंने उल्लेख नहीं किया है।

ऋषभसागर—तपागच्छीय चारित्रसागर>कल्याणसागर>ऋद्धि-सागर के शिष्य थे। इनकी रचना 'गुणमंजरी वरदत्त चौपाई' (सं० १७४८ ?) कार्त्तिक शुक्ल ५ सोमवार, आगरा)

आदि-प्रणमुं जगदानंदकर जगनायक जिनराज,
सांभरतां संपजैं सकल सुख सिरताज।
गुणधर गणधर लबधिकर श्रुत पूरबधर सार
कंचन कंजासन सरस, ध्यान धरइधीधीर।

आपके विद्यागुरु जसराज थे जो इन पंक्तियों से प्रकट होता है—
कलि प्रणमुं विद्यागुरु पंडित श्री जसराय।

कवि ने ज्ञान का महत्व बताते हुए लिखा है—
ज्ञान थकी पावैं मुगति, ग्यानइं परमानंद,
ज्ञान कलपतरु सम कह्यो, सुणो भविक जनवृंद।

१. मोहनलाल दलीचन्द देसाई—जैन गुर्जर कवियो भाग ३ पृ० १४३० (प्र० सं०) और भाग ५ पृ २८७-२८८ (न० सं०)।
२. वही, भाग ५ पृ० ४१७-१८ (न० सं०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com